33945

No. of Printed Pages : 4 | बी.एच.डी.ई.-101/ई.एच.डी.-1

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

सत्रांत परीक्षा, 2019

ऐच्छिक पाठ्यक्रम : हिन्दी

बी.एच.डी.ई.-101/ई.एच.डी.-1 : हिन्दी गद्य

समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

नोट : कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **प्रथम प्रश्न अनिवार्य** है।

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से **किन्हीं तीन** की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए : [12x3=36]

(क) यह है आजादी! पहले विदेशी सरकार लोगों को कैद करती थी कि वे आजादी के लिए लड़ना चाहते थे; अब अपने ही भाई अपनों को तनहाई कैद दे रहे हैं, क्योंकि वे आजादी के लिए ही लड़ाई रोकना चाहते हैं। फिर मानव प्राणी का स्वाभाविक वस्तुवाद जागा, और उन्होंने गैराज, कोठरी, आँगन का निरीक्षण इस दृष्टि से आरंभ किया कि क्या-क्या सुविधाएँ वह अपने लिए कर सकते हैं।

(ख) पाँच-छह दिन तक जियाराम ने पेट भर भोजन नहीं किया। कभी दो-चार कौर खा लेता, कभी कह देता भूख नहीं है। उसके चेहरे का रंग उड़ा रहता था। रातें जागते

कटतीं, प्रतिक्षण थानेदार की शंका बनी रहती। यदि वह जानता कि मामला इतना तूल खींचेगा तो कभी ऐसा न करता। उसने तो समझा था - कि किसी चोर पर शुबहा होगा। मेरी तरफ किसी का ध्यान भी नहीं जाएगा, पर अब भांडा फूटता हुआ मालूम होता था। अभागा थानेदार जिस ढंग से छानबीन कर रहा था, उससे जियाराम को बड़ी शंका हो रही थी।

(ग) मौर्य ! लो अपना शस्त्र ! (फेंक देते हैं) यह कलंक इसी समय दूर करता हूँ। राजमंत्री राक्षस की राजनीति के कुचक्र में आने वाले चंद्रगुप्त ! क्या मैं अपनी शिखा खोलकर विनाश की प्रतिज्ञा करूँ ? जिस ब्राह्मण की शिखा सर्पिणी ने नंदवंश को एक ही दंशन में समाप्त कर दिया, क्या मौर्य भी उस सर्पिणी पर हाथ रखना चाहता है ? जिस चंद्रगुप्त को अपना आत्मीय समझकर कुसुमपुर के सिंहासन पर आरूढ़ कराया, उसी चंद्रगुप्त के विनाश से क्या श्मशान को सुसज्जित करूँ।

(घ) राजा का भय मंदा का गला नहीं घोंट सकता। तुम लोगों को यदि कुछ भी बुद्धि होती, तो इस अपनी कुल मर्यादा, नारी को, शत्रु के दुर्ग में यों न भेजते। भगवान ने स्त्रियों को उत्पन्न करते ही अधिकारों से वंचित नहीं किया है किन्तु तुम लोगों की दस्यु-वृत्ति ने उन्हें लूटा है। इस परिषद् से मेरी प्रार्थना है कि आर्य समुद्रगुप्त का विधान तोड़कर जिन लोगों ने राजकिल्विष किया हो उन्हें दंड

मिलना चाहिए।

(ङ) गुरु साहब न लें, तो घीसा रात भर रोएगा - छुट्टी भर रोएगा। ले जाएँ तो वह रोज नहा-धोकर पेड़ के नीचे पढ़ा हुआ पाठ दोहराता रहेगा और छुट्टी के बाद पूरी किताब पट्टी पर लिखकर दिखा सकेगा। और तब अपने स्नेह में प्रगल्भ उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मैं भावातिरेक से ही निश्चय हो रही। उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी ऐसा मुझे विश्वास नहीं; परंतु उस दक्षिणा के सामने संसार में अब तक सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।

2. 'उसने कहा था' कहानी की विशिष्टता बताइए। [16]

3. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के प्रतिपाद्य का विवेचन कीजिए। [16]

4. 'निर्मला' उपन्यास के आधार पर निर्मला का चरित्र-चित्रण कीजिए। [16]

5. नुक्कड़ नाटक से आप क्या समझते हैं ? नुक्कड़ नाटक की दृष्टि से 'सबसे सस्ता गोश्त' का मूल्यांकन कीजिए। [16]

6. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की विशेषताएँ बताइए। [16]

7. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' के अंतर्वस्तु पर प्रकाश डालिए। [16]

8. 'शरणदाता' कहानी की विशेषताएँ बताइए। [16]

9. श्रव्य-दृश्य माध्यमों से आप क्या समझते हैं ? इन माध्यमों के लिए लेखन और साहित्यिक लेखन में क्या अंतर है ? [16]

10. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :[8x2=16]

(क) हिन्दी गद्य के विकास के कारण

(ख) यात्रावृत्तांत

(ग) 'भैया एक्सप्रेस'

(घ) रेडियो नाटक

----- x -----